समाचार वाणी
ख़बर जो करें असर !

नाशिक | Saturday, 19 September 2026

“मम्मी, मैनें आपका दिल तोड़ा...”—राजेंद्र प्लेस मेट्रो स्टेशन से छात्र की छलांग के बाद दिल्ली मे उंग्र विरोध

Publisher

Published on 20 Nov 2025

दिल्ली में एक ऐसी दर्दनाक घटना सामने आई है जिसने न केवल शिक्षा प्रणाली को झकझोर दिया है, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य को लेकर गंभीर सवाल भी खड़े कर दिए हैं। राजधानी के राजेंद्र प्लेस मेट्रो स्टेशन से कूदकर क्लास 10 के एक 16 वर्षीय छात्र ने अपनी जान दे दी, जिसके बाद पूरे शहर में इस घटना को लेकर आक्रोश फैल गया। छात्र द्वारा छोड़े गए सुसाइड नोट ने माता-पिता, समाज और शिक्षा जगत को गहरी चिंता में डाल दिया है।

मंगलवार दोपहर, छात्र ने मेट्रो स्टेशन के प्लेटफॉर्म से छलांग लगा दी। मौके पर मौजूद कुछ लोगों ने तुरंत इसकी सूचना पुलिस को दी और उसे अस्पताल पहुंचाया गया। लेकिन डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। जब पुलिस ने उसकी स्कूली बैग की जांच की, तो उसमें मिला सुसाइड नोट इस त्रासदी का सबसे भावुक और दर्दनाक हिस्सा बनकर सामने आया।

नोट में छात्र ने अपने माता-पिता से माफी मांगते हुए लिखा—
“मम्मी, पापा... मै आपका दिल तोड़ गया। मुझे माफ़ कर देना। मेरे टीचर्स ने मुझे इतना परेशान किया कि मै और सहन नहीं कर पाया।”

नोट में यह भी लिखा गया कि उसके अंग दान कर दिए जाएं, ताकि उसकी मौत किसी और की जिंदगी की वजह बन सके। यह अपील समाज में छिपे उस दर्द को उजागर करती है जिसे वह लंबे समय से सह रहा था।

परिवार ने पुलिस को दिए बयान में चार शिक्षकों के नाम बताए हैं, जिन पर छात्र ने मानसिक उत्पीड़न का आरोप लगाया था। इन चार में स्कूल की प्रधानाचार्या, एक कोऑर्डिनेटर और दो शिक्षक शामिल हैं। पिता का कहना है कि उनका बेटा छोटी-छोटी बातों पर डांटा जाता था, उसकी आवाज को कभी गंभीरता से नहीं लिया गया।

परिवार की शिकायत के आधार पर पुलिस ने **आत्महत्या के लिए उकसाने (Abetment to Suicide)** का मामला दर्ज कर

लिया है।

घटना के बाद बुधवार को स्कूल के बाहर भारी विरोध प्रदर्शन देखने को मिला। छात्रों, अभिभावकों और स्थानीय लोगों ने स्कूल प्रशासन पर गुस्सा जाहिर करते हुए नारेबाजी की। कई छात्रों ने कहा कि यह "सुसाइड नहीं, मर्डर है" और जिम्मेदारों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई होनी चाहिए।

प्रदर्शनकारियों ने आरोपित शिक्षकों को तत्काल निलंबित करने और पूरे मामले की स्वतंत्र जांच की मांग की। प्रदर्शन में शामिल कई अभिभावकों का कहना था कि स्कूलों में बढ़ती कठोरता और दबाव बच्चों को मानसिक रूप से कमजोर बना रही है।

कई छात्रों ने बताया कि शिकायतें उठाने पर उन्हें अक्सर नजरअंदाज कर दिया जाता है। कुछ का कहना था कि शिक्षकों के व्यवहार में बदलाव की जरूरत है, खासकर उस समय जब टीनएज उम्र में छात्र भावनात्मक रूप से बेहद संवेदनशील होते हैं।

यह घटना एक बार फिर साबित करती है कि शिक्षा व्यवस्था सिर्फ किताबों और अंकों से नहीं चलती, बल्कि इसका आधार मानवीयता, समझ और मानसिक संतुलन भी होना चाहिए। जब शिक्षा संस्थान बच्चों की भावनाओं को नजरअंदाज कर देते हैं, तब ऐसे हादसे समाज में गहरे घाव छोड़ जाते हैं।

फिलहाल, पुलिस जांच जारी है और स्कूल प्रशासन की भूमिका को लेकर कई सवाल खड़े हो चुके हैं। यह मामला दिल्ली ही नहीं, पूरे देश के लिए एक चेतावनी है कि समय रहते मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता नहीं दी गई, तो ऐसे हादसे और भी बढ़ सकते हैं।

शिक्षा विशेषज्ञों का भी मानना है कि स्कूलों में काउंसलिंग सिस्टम को मजबूत करना, शिक्षकों को संवेदनशीलता और मानसिक स्वास्थ्य पर प्रशिक्षण देना और बच्चों की समस्याओं को गंभीरता से सुनना बेहद जरूरी है।

इस दुखद घटना ने दिल्ली की शिक्षा प्रणाली में सुधार की मांग को फिर से तेज कर दिया है, और उम्मीद है कि यह केवल एक खबर बनकर नहीं रह जाएगी, बल्कि बदलाव की शुरुआत बनेगी।

DISCLAIMER: the views/contents expressed/presented herein, within this advertorial and promotional feature are the sole and exclusive responsibility of individual clients/expert/their authorised representative/Publisher, to which effect, publication house/its representative/affiliates are not responsible/liable whatsover.